

सं.ओ.वि./77-84/32785.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै.एस.जी.स्टील प्रा.लि., प्लाट नं. 6, बलबगड़, के श्रमिक श्री साविर हुसैन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित तीनों लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला हैः—

क्या श्री साविर हुसैन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तभा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.ओ.वि./एफ.डी./77-84/32792.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै.एस.जी.स्टील, प्रा.लि., प्लाट नं. 6, बलबगड़, के श्रमिक श्री मुतिवल रहमान तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित तीनों लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला हैः—

क्या श्री मुतिवल रहमान की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.ओ.वि./एफ.डी./97-84/32799.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै.ट्रांस आटो, 1-5 डी.एल.एफ. इन्डस्ट्रीजल एरिया, मधुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री भोपाल सिह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5413-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित तीनों लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला हैः—

क्या श्री भोपाल सिह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.ओ.वि./एफ.डी./141-84/32806.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै.सुरेन्द्रा एण्ड ब्रदर्ज, 104, डी.एन.एफ., मधुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री श्री राम तभा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5413-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20

जून, 1968 के साथ पढ़ने हुए अधिसूचना सं. 11496-जी-श्रम- ३४ श्रम-५७/३७/ 12/५ दिनांक 7 फरवरी 1958 द्वारा उत्तर अधिनियम की धारा 7 के प्रतीत गठित अम न्यायालय करीदाराद को विवादप्रस्त या उससे नुसार या उससे सम्बन्धित तोचे लिखा सामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उत्तर प्रस्तावों तथा अधिक जीवित होने पर प्रदर्शन मामला है या विवाद गे सुमंगल अवधार संवैधित मामला है :—

कथा श्री श्रीमन्मही सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

प. गो.वि./एफ.डी./143—84/32813.—चिन्हितयाजी के नाम से तथा की राये है कि मे. प्रसीजन स्टील एण्ड इन्डीनियरिंग कंपनी, 14/4 मधुरा रोड, करीदाराद, के श्रमिक श्री राम दास तथा उनके प्रत्यक्षों के मध्य इसमें इसके वाद निर्वित मामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

ग्राहक द्वारा हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उम्मारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-श्रम-68-श्रम-५७/११२४५, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उत्तर अधिनियम की धारा 7 के प्रतीत गठित अम न्यायालय प्रस्ताव तथा उससे नुसार या उससे सम्बन्धित तोचे लिखा सामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उत्तर प्रस्तावों तथा प्रतिक जीवित होने पर प्रदर्शन मामले में कोई आद्योगिक विवाद है :—

क्या श्री राम दास श्री सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

प. गो.वि./एफ.डी./142—84/32970.—चिन्हितयाजी के नाम से तथा की राये है कि मे. भास्तीय इन्डस्ट्रीज स्टील क. लि., 13/4 मधुरा रोड, करीदाराद, के श्रमिक श्री दीपा नन्दन तथा उनके प्रत्यक्षों के मध्य इसके वाद निर्वित मामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

ग्राहक द्वारा हरियाणा के राज्यपाल निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उम्मारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के नाम पर हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम-५७/११२४५, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उत्तर अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय करीदाराद को विवादप्रस्त या उससे नुसार या उससे सम्बन्धित तोचे लिखा सामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उत्तर प्रस्तावों तथा प्रतिक के ग्राहक तथा विवादप्रस्त तथा उनके विवाद में पुरांग अवगत संवैधित मामला है :—

क्या श्री हीरा नन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

प. गो.वि./एफ.डी./144—84/32827.—चिन्हितयाजी के राज्यपाल की राये है कि मे. दीपक न्यूमैटिक्स प्रा.लि., 8 किमि. मधुरा रोड, करीदाराद, के श्रमिक श्री घासी लाल तथा उसके प्रत्यक्षों के मध्य इसमें इसके वाद निर्वित मामले में कोई आद्योगिक विवाद है ;

ग्राहक द्वारा हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उम्मारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीमद्भुद्धा सं. 11495-जी-श्रम-68-श्रम-५७/११२४५, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उत्तर अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय करीदाराद को विवादप्रस्त या उससे नुसार या उससे सम्बन्धित तोचे लिखा सामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उत्तर प्रस्तावों तथा अधिक के ग्राहक तथा विवादप्रस्त तथा उनके विवाद में पुरांग अवगत संवैधित मामला है :—

क्या श्री घासी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?